सुधर्मा महा-महा संघ भारत
विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट · Bharat

भगवान श्री जगन्नाथ के पावन वेश

पुरी श्रीमंदिर के बत्तीस दिव्य वेश और प्रत्येक का महत्व

"32 बेश" प्रदर्शनी के छायाचित्र · लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर · 14–20 अगस्त 2026

एक प्रकाशन —
सुधर्मा महा-महा संघ भारत
मार्गदर्शन: पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र

www.bhavishyamalika.com
www.kalkiabatara.org
www.trisandhya.com
X @KalkiOfficialX

मार्गदर्शक

पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र

भविष्य मालिका के व्याख्याता · श्रीमद्भागवत महापुराण के शिक्षक

यह प्रकाशन **सुधर्मा महा-महा संघ भारत** द्वारा, बिश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में और **पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र** के मार्गदर्शन में संकलित एवं प्रस्तुत है, जिनके दैनिक प्रवचन श्री जगन्नाथ धाम की संस्कृति, श्रीमद्भागवत महापुराण के ज्ञान और भविष्य मालिका की शिक्षा को भारत और विदेश के भक्तों तक पहुँचाते हैं।

आगे के पृष्ठ इसी भाव से अर्पित हैं: पहले प्रभु जगन्नाथ के पावन वेश, ताकि पाठक जगत के नाथ को वैसे ही देखे जैसे पुरी देखता है — आत्मीय, ऋतु-सम्मत, सतत परिवर्तनशील, फिर भी सदा वही — और अन्तिम पृष्ठों में वह व्यापक शिक्षा, जो यही प्रभु हर युग को धर्म की ओर पुकारते हैं।

छायाचित्रों के विषय में

इस ग्रन्थ के बत्तीस वेश-छायाचित्र भगवान जगन्नाथ के दिव्य वेशों की “32 बेश” प्रदर्शनी एवं सांस्कृतिक उत्सव में लिए गए, जो 14–20 अगस्त 2026 को श्री लिंगराज मन्दिर के निकट लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर में आयोजित हुआ — ओड़िशा सर्विस सेंटर फॉर द दिव्यांग पीपुल्स, श्री जगन्नाथ संस्कृति प्रचार संस्थान और विश्व हिन्दू परिषद (भुवनेश्वर महानगर) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित। ये वेशों की कलात्मक प्रदर्शनी-प्रस्तुतियाँ हैं, क्योंकि श्रीमंदिर के भीतर रत्नसिंहासन की फ़ोटोग्राफ़ी अनुमत नहीं है। सुधर्मा महा-महा संघ भारत ने यह ग्रन्थ भक्तों की जानकारी हेतु संकलित एवं प्रकाशित किया है। प्रत्येक वेश-शीर्षक के नीचे की ओड़िया पंक्ति प्रदर्शनी में लगे क्रमांकित पट्ट को यथावत् प्रस्तुत करती है; वही क्रमांक सर्वत्र प्रयुक्त हैं।

सुधर्मा महा-महा संघ भारत

बिश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट · Bharat

www.bhavishyamalika.com · www.kalkiabatara.org · X @KalkiOfficialX

प्राक्कथन

भगवान श्री जगन्नाथ के पावन वेश

पुरी के श्रीमंदिर में जगत के स्वामी की उपासना किसी दूरस्थ विचार के रूप में नहीं होती। प्रभु जागते हैं, स्नान करते हैं, वस्त्र धारण करते हैं, भोजन पाते हैं, भक्तों को दर्शन देते हैं, संगीत सुनते हैं, शयन करते हैं — और ऋतुओं, पर्वों तथा वर्ष के भावों के अनुसार अपना वेश बदलते हैं। यही बदलता हुआ शृंगार **वेश** (ओड़िया *बेश*) कहलाता है, और परम्परा में इनकी संख्या बत्तीस मानी जाती है। विग्रह चार हैं: भगवान जगन्नाथ; उनके ज्येष्ठ भ्राता बलभद्र; उनकी बहन सुभद्रा; और सुदर्शन, प्रभु का चक्र — जो पुरी के महामन्दिर *श्रीमंदिर* के गर्भगृह के रत्नजड़ित सिंहासन *रत्नसिंहासन* पर एक साथ विराजमान हैं।

श्री जगन्नाथ — जगत के नाथ, पुरी

वेश वस्त्र, पुष्प, चन्दन और स्वर्ण में लिखा हुआ धर्मशास्त्र है। जब जगन्नाथ स्नान पूर्णिमा को गजानन का गज-मुकुट धारण करते हैं, या राम का धनुष, या कृष्ण की वंशी, या शीत में ऊनी आवरण — तो वे यह सिखाते हैं कि एक ही परमात्मा प्रेम की माँग पर हर रूप ले लेता है। जब दो सौ किलो से अधिक स्वर्ण उसी काष्ठ-विग्रह को ढकता है जो पखवाड़े भर पहले अनसर गृह में रुग्ण पड़ा था — तो वे सिखाते हैं कि सम्राट-भाव और कोमलता एक ही ईश्वर के हैं।

> जो जगत के नाथ हैं, वे स्वयं को मनुष्य के हाथों सजने देते हैं — यही पुरी का सम्पूर्ण रहस्य है।

विषय-सूची

मार्गदर्शक	2
वेश-पंचांग — एक दृष्टि में	4
नित्य वेश-क्रम	5
वार्षिक उत्सव-चक्र	8
टाहिया लागि वेश — रथयात्रा	13
सुना वेश	14
नागार्जुन वेश	21
वेश विश्व को क्या सिखाते हैं	27
प्रकाशक परिचय	28
भविष्य मालिका	29
जगन्नाथ से कल्कि तक	30
रक्षा का मार्ग	31
हमें क्या करना चाहिए?	32
समापन में	33

वेश-पंचांग — एक दृष्टि में

प्रभु के वस्त्रागार में एक वर्ष

ऋतु / मास	वेश	तिथि / अवसर
प्रतिदिन	**01 अबकाश · 02 सादा · 03 बड़ा शृंगार**	प्रातः · दिवस · रात्रि
वैशाख (अप्रैल–मई)	**04 चन्दन लागि**	अक्षय तृतीया, 42 दिन
ज्येष्ठ (मई–जून)	**05 गजानन (हाथी) वेश**	स्नान पूर्णिमा
आषाढ़ (जून–जुलाई)	**07 नवयौवन · 08 टाहिया लागि (रथयात्रा) · 29 सेनापट लागि · 09 सुना वेश**	रथयात्रा पूर्वसन्ध्या · रथयात्रा · बाहुड़ा पूर्वसन्ध्या · बाहुड़ा एकादशी
श्रावण (जुलाई–अगस्त)	**चिता लागि (अक्रमांकित) · 10 झूलण सन्ध्याधूप**	श्रावण अमावस्या · शुक्ल 10 से भाद्रपद कृष्ण 1 (7 दिन)
भाद्रपद (अगस्त–सितम्बर)	**11 वनभोजी · 12 कालिय दलन · 13 प्रलम्बासुर बध · 14 कृष्ण-बलराम · 15 बलि-वामन**	कृष्ण 10 · 11 · 12 · 13 · शुक्ल 12
आश्विन (सितम्बर–अक्टूबर)	**09 सुना वेश · 17 राधा-दामोदर आरम्भ**	विजयादशमी · शुक्ल एकादशी
कार्तिक (अक्टूबर–नवम्बर)	**17 राधा-दामोदर · 16 हरिहर (बलभद्र) · 18 लक्ष्मी-नारायण · 19 बंकचूड़ · 20 त्रिविक्रम · 21 अड़किआ (लक्ष्मी-नृसिंह) · 32 राजराजेश्वरी · (22 नागार्जुन)**	शुक्ल 10 तक · दीपावली से पूर्णिमा · 11 · 12 · 13 · 14 · पूर्णिमा · (केवल 6-दिवसीय पंचुक)
मार्गशीर्ष (नवम्बर–दिसम्बर)	**23 घोड़लागि आरम्भ · 24 श्राद्ध वेश**	ओढ़ण षष्ठी · शुक्ल 14
पौष (दिसम्बर–जनवरी)	**26 नबांक · 27 मकर चौरासी · 25 पुष्याभिषेक**	मकर संक्रान्ति पूर्वसन्ध्या · मकर संक्रान्ति · पौष पूर्णिमा
माघ (जनवरी–फरवरी)	**28 पद्म · 30 गज-उद्धारण · 06 जामालागि आरम्भ**	माघ अमावस्या से पूर्व बुध/शनि · माघ पूर्णिमा · बसन्त पंचमी
फाल्गुन (फरवरी–मार्च)	**31 चाचेरी · 09 सुना वेश**	शुक्ल 10–14 · दोल पूर्णिमा
चैत्र (मार्च–अप्रैल)	**रघुनाथ (ऐतिहासिक, अक्रमांकित)**	रामनवमी काल

तिथियाँ श्रीमंदिर के ओड़िया चान्द्र पंचांग के अनुसार हैं; ग्रेगोरियन मास अनुमानित हैं। सुना वेश वर्ष में पाँच बार होता है — बाहुड़ा एकादशी, विजयादशमी, कार्तिक पूर्णिमा, पौष पूर्णिमा और दोल पूर्णिमा। संख्याएँ प्रदर्शनी के प्रदर्शन-क्रमांक हैं, जो इस प्रकाशन में सर्वत्र प्रयुक्त हैं।

32
वर्ष भर के पारम्परिक वेश

5×
सुना वेश — स्वर्ण-वेश

1460
ई. — कपिलेन्द्र देव द्वारा सुना वेश का आरम्भ

26 years
का अन्तराल — अन्तिम नागार्जुन वेश (2020)

नित्य वेश-क्रम

प्रातःकालीन मंगल आरती से रात्रि पहुड़ तक, प्रभु का वेश प्रहरों के साथ बदलता है।

01

अबकाश वेश

तड़प-उत्तरी वेश

୧. ଅବକାଶ ବେଶ

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब प्रतिदिन प्रातः, मंगल आरती के पश्चात्

वेश-विधान

प्रातःकालीन नित्यकर्म एवं स्नान के समय विग्रहों को सादा *तड़प* (अधोवस्त्र) और *उत्तरीय* पहनाया जाता है — दातुन, दर्पण के समक्ष प्रतीकात्मक स्नान, कपूर-जल का छिड़काव।

महत्व

दिन का आरम्भ प्रभु को मूर्ति नहीं, जीवित पुरुष मानकर होता है। बाद के समस्त वैभव के नीचे यही सरलता है — ईश्वर परिवार के सदस्य हैं, जिनकी सेवा उसी वात्सल्य से होती है जो माता-पिता या संतान को दिया जाता है।

02

सादा वेश

नित्य वेश

୨. ସାଦା ବେଶ

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब प्रतिदिन कई बार, प्रत्येक भोग के आसपास

वेश-विधान

दिन के विहित रंग के रेशमी वस्त्र, ताज़े पुष्पहार, तुलसी और सामान्य दिनों के हल्के आभूषण। प्रत्येक प्रमुख भोग के बाद वेश बदल दिया जाता है — प्रभु दो बार एक ही पुष्पों में नहीं दिखते।

महत्व

भक्ति केवल पर्वों के लिए आरक्षित नहीं। शताब्दियों से बिना एक दिन टूटे चलता यह नित्य-क्रम श्रीमंदिर की सबसे गहरी शिक्षा है — निरन्तरता स्वयं प्रेम का एक रूप है।

03

बड़ा शृंगार वेश

रात्रि का महाशृंगार

୩. ବଡ଼ଶୃଙ୍ଗାର ବେଶ

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब प्रतिदिन रात्रि, पहुड़ (शयन) से पूर्व

वेश-विधान

दिन का सर्वाधिक सुन्दर वेश। विग्रह *खण्डुआ पाट* धारण करते हैं — नुआपटना में बुना रेशम जिस पर जयदेव के *गीतगोविन्द* के श्लोक अंकित हैं — तथा विस्तृत पुष्पालंकार। शयन के समय गीतगोविन्द का गान होता है।

महत्व

प्रत्येक दिन के अन्त में सौन्दर्य, काव्य और संगीत प्रभु के चरणों में रखे जाते हैं। शृंगार — प्रेम का सौन्दर्यशास्त्र — पावन से भटकाव नहीं, उसकी सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। बुनकर का करघा भी शास्त्र का पृष्ठ बन जाता है।

वार्षिक उत्सव-चक्र

बत्तीस वेश यहाँ उसी क्रम में क्रमांकित हैं जिस क्रम में वे भुवनेश्वर प्रदर्शनी में प्रदर्शित थे; पृष्ठ 4 का पंचांग प्रत्येक का चान्द्र-वर्ष में स्थान दर्शाता है।

वेशों के चारों ओर अनुष्ठान-वर्ष

ऋतु-वर्ष के दो महान अनुष्ठान — जो कड़े अर्थ में वेश नहीं हैं — पहले केवल शब्दों में वर्णित हैं; उसके बाद क्रमांकित वेश आते हैं।

चिता लागि अमावस्या

स्वर्ण-ललाट-आभूषण की पुनर्स्थापना

कब श्रावण अमावस्या (जुलाई–अगस्त)

चिता — प्रत्येक विग्रह के ललाट पर धारण किया जाने वाला स्वर्ण-तिलक-आभूषण — स्नान पूर्णिमा से पूर्व उतारा जाता है और इस अमावस्या को विधिपूर्वक पुनः धारण कराया जाता है। तीनों चिता रत्नजड़ित स्वर्ण के हैं — जगन्नाथ के लिए हीरा, बलभद्र के लिए नीलम, सुभद्रा के लिए पन्ना। ओड़िशा इस दिन *चिताउ पीठा* बनाकर मनाता है।

> ललाट-चिह्न अन्तर्दृष्टि का स्थान है। इसकी वापसी वर्षा-ऋतु की विधियों के बाद प्रभु के पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ और सम्पूर्ण राज-वेश की पुनर्स्थापना का संकेत है — छोटा आभूषण, बड़ा अर्थ: दृष्टि लौटी, प्रज्ञा पुनः सिंहासनारूढ़।

रघुनाथ वेश

प्रभु श्रीराम-रूप में

कब चैत्र — रामनवमी काल (मार्च–अप्रैल) · ऐतिहासिक वेश, अब विरल

जगन्नाथ धनुष-बाण सहित राम-रूप में सजते थे और रत्नसिंहासन पर शोला-काष्ठ से बनी लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमान की आकृतियाँ रखी जाती थीं। अभिलेख इसका वर्णन करते हैं; प्रथा प्रायः लुप्त है और स्मरण की जा रही है।

> राम और कृष्ण, विष्णु और जगन्नाथ, वैष्णव और शैव, आदिवासी और वैदिक — वेश-पंचांग सनातन धर्म की धाराओं के बीच की हर दीवार घोल देता है। जिसने चैत्र में धनुष धारण किया, वही भाद्रपद में वंशी धारण करता है।

04

चन्दन लागि वेश

चन्दन यात्रा

୪. ଚନ୍ଦନଲାଗି ବେଶ

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तृतीया, अप्रैल–मई) · 42 दिन

वेश-विधान

21 दिन (*बाहर चन्दन*) प्रतिनिधि विग्रह मदनमोहन, राम, कृष्ण — “पंच पाण्डव” मन्दिरों के पाँच शिवलिंगों के साथ — पालकी में नरेन्द्र सरोवर जाकर सुसज्जित नौकाओं (*बापा*) में विहार करते हैं। आगे 21 दिन (*भीतर चन्दन*) विधि मन्दिर के भीतर चलती है। चन्दन, कपूर और कस्तूरी का विपुल लेप होता है। इसी दिन रथ-निर्माण का शुभारम्भ होता है।

महत्व

प्रभु ओड़िशा की ग्रीष्म-तपन अपने भक्तों की भाँति अनुभव करते हैं — अतः उन्हें शीतल किया जाता है। शिव उसी नौका में विष्णु के साथ विराजते हैं — श्रीमंदिर सम्प्रदाय-भेद को मौन अस्वीकार करता है। ऋतु, पर्यावरण और भक्ति एक साथ चलते हैं।

05

गजानन (हाथी) वेश

स्नान पूर्णिमा का गज-वेश

୫. ଗଜାନନ ବା ହାତୀ ବେଶ

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब ज्येष्ठ पूर्णिमा — स्नान यात्रा (मई–जून)

वेश-विधान

ज्येष्ठ पूर्णिमा को विग्रह *पहंडी* में स्नान-मण्डप पर लाए जाते हैं और 108 कलशों के अभिमन्त्रित जल से स्नान कराया जाता है। उसी सन्ध्या जगन्नाथ और बलभद्र गणेश-रूप में — सूँड़ और कानों सहित गज-मुकुट — सजते हैं; सुभद्रा पद्म-रूप में।

महत्व

वर्ष के जिस एक दिन प्रभु सबके समक्ष खुले में स्नान करते हैं, उसी दिन वे गजानन-रूप में दर्शन देते हैं — वह गज-मुख रूप जो पूरे भारत में गणेश के रूप में प्रिय है। यह वेश सिखाता है कि गणेश का रूप भी जगन्नाथ में समाहित है — भगवान वही रूप लेते हैं जिससे भक्त प्रेम करता है। यह पुरी का जीवन्त बहुलता-पत्र है।

06

जामालागि वेश

हल्का शीत-वेश

୬. ଜାମାଲାଗି ବେଶ

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब माघ शुक्ल पंचमी (बसन्त पंचमी) से फाल्गुन शुक्ल दशमी (फरवरी–मार्च)

वेश-विधान

ठण्ड घटते ही भारी घोड़लागि आवरण हटाकर *जामा* — हल्का कोटनुमा वस्त्र — बसन्त के चटख रंगों में पहनाया जाता है।

महत्व

वस्त्रागार भी पृथ्वी की गति का अनुसरण करता है। वसन्त — सरस्वती और नए आरम्भों की ऋतु — खेतों में स्वागत से पहले प्रभु की देह पर स्वागत पाता है।

07

अनसर एवं नवयौवन वेश

रुग्णता का पखवाड़ा और नवयौवन

୭. ନବଯୌବନ ବେଶ

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब ज्येष्ठ पूर्णिमा से आषाढ़ अमावस्या · नवयौवन दर्शन रथयात्रा की पूर्वसन्ध्या

वेश-विधान

महास्नान के बाद विग्रह “रुग्ण” होकर पन्द्रह दिन *अनसर घर* में एकान्तवास करते हैं, जहाँ केवल दइतापति सेवक — शबर-प्रमुख विश्वावसु के वंशज — जड़ी-बूटी और तैल से सेवा करते हैं। भक्त *अनसर पटी* चित्रों के दर्शन करते हैं। फिर नेत्र-चित्रण (*नेत्रोत्सव*) होता है और प्रभु *नवयौवन दर्शन* देते हैं।

महत्व

ईश्वर स्वयं को दुर्बलता और स्वास्थ्य-लाभ की अनुमति देते हैं और अपनी अन्तरंग सेवा ब्राह्मण पुजारियों को नहीं, अपने आदिवासी बन्धुओं को सौंपते हैं। एकान्त के बाद नवीकरण। इतनी सच्ची छवि — दुर्बलता से गुज़रता हुआ पावन — विरले ही धार्मिक पंचांगों में मिलती है।

विशेष वेश

08

टाहिया लागि वेश — रथयात्रा

रथ-उत्सव — प्रभु भक्तों के बीच निकलते हैं

୮. ଟାହିଆ ଲାଗି ବେଶ

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (जून–जुलाई) · गुण्डिचा तक और वापसी — नौ दिन

वेश-विधान

पहंडी में विग्रह *टाहिया* — शोला, पुष्प और रंगीन कागज़ का ऊँचा मुकुट — धारण करते हैं। जगन्नाथ *नन्दिघोष* (16 चक्र, लाल-पीला), बलभद्र *तालध्वज* (14 चक्र, लाल-हरा), सुभद्रा *दर्पदलन* (12 चक्र, लाल-काला) पर आरूढ़ होकर लाखों भक्तों द्वारा गुण्डिचा मन्दिर — अपने “जन्मस्थान” — तक खींचे जाते हैं और *बाहुड़ा* में लौटते हैं।

महत्व

वर्ष भर गर्भगृह में केवल हिन्दुओं का प्रवेश है; इस दिन प्रभु स्वयं बाहर आकर बड़दाण्ड पर चलते हैं ताकि किसी भी देश, धर्म या जाति का मनुष्य उनके दर्शन कर सके और रस्सी छू सके। *जगन्नाथ* — “जगत के नाथ” — नाम कहा नहीं, जिया जाता है। यह विश्व के प्राचीनतम अविच्छिन्न लोक-उत्सवों में है।

विशेष वेश

09

सुना वेश

स्वर्ण वेश — बड़ा तढ़ाउ / राजाधिराज वेश

୯. ସୁନାବେଶ

चित्र: "32 बेश" प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब बाहुड़ा एकादशी को रथों पर; तथा विजयादशमी, कार्तिक पूर्णिमा, पौष पूर्णिमा और दोल पूर्णिमा को मन्दिर के भीतर — वर्ष में पाँच बार

वेश-विधान

विग्रह ठोस स्वर्ण से आच्छादित होते हैं: स्वर्ण-हस्त (*श्रीहस्त*), स्वर्ण-चरण (*श्रीपयर*), मुकुट (*किरीट*), जगन्नाथ के चक्र-शंख, बलभद्र के हल-मूसल, हार, तिलक और कर्णाभूषण — लगभग 138 प्रकार के आभूषणों में दो सौ किलो से अधिक स्वर्ण। यह परम्परा 1460 ई. में गजपति कपिलेन्द्र देव ने आरम्भ की, जो दक्षिण-विजय से सोलह गाड़ी स्वर्ण लाकर प्रभु को अर्पित कर गए।

चित्र: Rajarajeswari Vesha (No. 32) — Suna Vesha of Kartika Purnima

महत्व

राजा का समूचा युद्ध-कोष काष्ठ-देव का आभूषण बन जाता है — सम्पत्ति स्वामित्व से अर्पण में रूपान्तरित होती है। रथ पर स्वर्णमय प्रभु एक साथ लाखों को दिखते हैं: राजाधिराज, जिनका एकमात्र राज्य भक्तों का हृदय है। ओड़िशा के गजपति आज भी स्वयं को केवल उनका *आद्य सेवक* कहते हैं और स्वर्ण-झाड़ू से रथ बुहारते हैं।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

10

झूलण सन्ध्याधूप वेश

झूलन-उत्सव का सन्ध्या वेश

୧୦. ଝୁଲଣ ସନ୍ଧ୍ୟାଧୂପ ବେଶ

कब श्रावण शुक्ल दशमी से भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा (जुलाई–अगस्त) — झूलन यात्रा के सात दिन, सन्ध्या धूप के समय

वेश-विधान

झूलन यात्रा — श्रावण के झूला-उत्सव — की सात सन्ध्याओं में विग्रह सन्ध्या *धूप* हेतु महीन रेशम, ताज़ी मालाओं और हल्के मुकुटों में सजते हैं, जबकि प्रतिनिधि विग्रह मन्दिर में सुसज्जित *झूलन* पर झुलाए जाते हैं।

> **महत्व**
>
> झूला क्रीड़ा है, और क्रीड़ा उपासना है: सप्ताह भर जगत के नाथ वर्षा-सन्ध्याओं में संगीत और दीपों के बीच शिशु की भाँति झुलाए जाते हैं। पुरी कोमलता को ही पवित्र करता है — परमात्मा केवल विस्मय में नहीं, स्नेह में भी ग्रहण किए जाते हैं।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

11

वनभोजी वेश

वन-भोज का वेश

୧୧. ବଣଭୋଜି ବେଶ

कब भाद्रपद कृष्ण दशमी (अगस्त–सितम्बर)

वेश-विधान

प्रभु और उनके भ्राता वृन्दावन के ग्वाल-बालों के रूप में वन-भोज (*वनभोजन*) के लिए निकलते सजते हैं — लाठी, वंशी, छोटी पोटली, वन-पुष्पों की मालाएँ, साथ में गौ-बछड़े।

> **महत्व**
>
> जगत के नाथ चरागाहों के नंगे पाँव बालक भी हैं। सरलता, मित्रता और खुला वन गर्भगृह जितने ही पावन हैं। यह वेश कृष्ण के गोप-जीवन का स्मरण है — आनन्द, प्रकृति और समता की आध्यात्मिकता।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

12

कालिय दलन वेश

कालिय-नाग का दमन

୧୨. କାଳୀୟ ଦଳନ ବେଶ

कब भाद्रपद कृष्ण एकादशी (अगस्त–सितम्बर)

वेश-विधान

वस्त्र और शोला से लगभग तीस फुट लम्बा बहु-फणी सर्प बनाया जाता है; उसके फण जगन्नाथ के चरणों के नीचे रखे जाते हैं, जो यमुना में कालिय पर नृत्य करते बाल-कृष्ण के रूप में सजे होते हैं। वेश सन्ध्या-धूप तक रहता है।

> **महत्व**
>
> कृष्ण ने सर्प का वध नहीं किया — उसे वश में कर दूर भेजा और विषैली नदी लोगों व गौओं को लौटा दी। यह वेश दमन का नहीं, वशीकरण का दृष्टान्त है — अहंकार, विष और भय पर नृत्य होता है और जल पुनः निर्मल बहता है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

13

प्रलम्बासुर बध वेश

बलभद्र द्वारा प्रलम्बासुर का वध

୧୩. ପ୍ରଳମ୍ବାସୁରବଧ ବେଶ

कब भाद्रपद कृष्ण द्वादशी, मध्याह्न भोग के पश्चात्

वेश-विधान

यह विशेष रूप से बलभद्र का वेश है। ज्येष्ठ भ्राता हल और मूसल उठाए योद्धा-रूप में सजते हैं — उस दिन का स्मरण जब उन्होंने ग्वाल-बालों के खेल में उन्हें उठा ले जाने वाले प्रलम्बासुर का वध किया।

> **महत्व**
>
> निर्बल और बालकों की रक्षा करने वाला बल पावन है। जगन्नाथ-त्रयी में बलभद्र धर्म की रक्षक शक्ति हैं — शान्त ज्येष्ठ, जो युद्ध खोजते नहीं, समाप्त करते हैं। यह वेश कहता है — रक्षा प्रेम का ही कर्म है।

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

14

कृष्ण-बलराम वेश

दिव्य भ्रातृ-युगल

୧୪. କୃଷ୍ଣ ବଳରାମ ବେଶ

कब भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी (अगस्त–सितम्बर)

वेश-विधान

जगन्नाथ कृष्ण-रूप में — मयूरपंख, वंशी, पीताम्बर — और बलभद्र हल व नील वस्त्र में बलराम-रूप में; बीच में सुभद्रा द्वारका की बहन के रूप में।

> **महत्व**
>
> यह वेश वही स्पष्ट कहता है जो ओड़िशा सदा से जानता है: जगन्नाथ *ही* कृष्ण हैं, श्याम प्रभु, और बलभद्र बलराम। काष्ठ-रूप कोई अन्य ईश्वर नहीं, वही परमात्मा शबर-वन की भाषा में — जो हर जनजाति और हर भाषा को अपनाता है।

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

15

बलि-वामन वेश

ब्रह्माण्ड नापने वाला वामन

୧୫. ବାମନ ବେଶ

कब भाद्रपद शुक्ल द्वादशी — वामन द्वादशी / सुनिआ (अगस्त–सितम्बर)

वेश-विधान

जगन्नाथ पंचम अवतार वामन — छत्र, कमण्डलु और यज्ञोपवीत धारण किए छोटे ब्राह्मण बालक — के रूप में राजा बलि के समक्ष सजते हैं। यही दिन *सुनिआ* है — गजपति राज्याब्द (*अंक*) का पारम्परिक नववर्ष।

> **महत्व**
>
> सबसे छोटा रूप समूचा ब्रह्माण्ड समेटे है; तीन पग में पृथ्वी, आकाश और स्वर्ग। अहंकार बल से नहीं, इतनी पूर्ण विनम्रता से जीता जाता है कि दर्पी राजा झुकता है और आशीर्वाद पाता है। यह हर सिंहासन के लिए पाठ है — इसीलिए ओड़िशा के राजा अपने वर्ष इसी दिन से गिनते हैं।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

16

हरिहर वेश

भगवान बलभद्र हरि और हर के संयुक्त रूप में

୧୬. ହରିହର ବେଶ

कब दीपावली अमावस्या से कार्तिक पूर्णिमा तक — प्रतिदिन मध्याह्न धूप तक (अक्टूबर–नवम्बर)

वेश-विधान

बड़ठाकुर बलभद्र का एक विशेष वेश: कार्तिक के अन्तिम पखवाड़े में वे प्रतिदिन मध्याह्न धूप तक हरि और हर — विष्णु और शिव — के संयुक्त रूप में सजाए जाते हैं, एक ही भक्ति-दृष्टि में।

> **महत्व**
>
> उपासना के आभासी भेद परमात्मा की एकता में विलीन हो जाते हैं। जिस मन्दिर में शिवलिंग पहले से चन्दन-नौकाओं पर विष्णु के साथ विहार करते हैं, वहाँ यह वेश वही सत्य स्वयं रत्नसिंहासन पर कहता है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

17

राधा-दामोदर वेश

दिव्य प्रेम के वेश में एक मास

୧୭. ରାଧାଦାମୋଦର ବେଶ

कब आश्विन शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी (अक्टूबर–नवम्बर) — पूरा कार्तिक व्रत

वेश-विधान

पूरे चान्द्र मास विग्रह विशेष “त्रि-क्रॉस” ढंग से लिपटे मखमली वस्त्र, रंगीन कपड़े से ढके बाँस-पट्ट के मुकुट और स्वर्ण-हस्त धारण करते हैं — राधा और दामोदर (यशोदा माता द्वारा रस्सी से बाँधे गए कृष्ण) का रूप। यह अक्रूर को यमुना-जल में हुए दिव्य-युगल दर्शन का स्मरण है।

> **महत्व**
>
> कार्तिक पुरी में व्रत का मास है, जब सहस्रों *हविष्याली* यात्री — अनेक विधवाएँ — एक समय के सादे भोजन पर रहकर ब्रह्ममुहुर्त में उठते हैं। उनके प्रभु वैभव के लिए नहीं, प्रेम के लिए सजते हैं: जो ईश्वर माँ के स्नेह से बँध जाने देता है, वही यात्री का इष्ट है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

18

लक्ष्मी-नारायण वेश (ठिआकिआ)

पाँच पंचुक वेशों में प्रथम — पाँचवाँ, राजराजेश्वरी, क्रमांक 32 पर है

୧୮. ଠିଆକିଆ / ଲକ୍ଷ୍ମୀନାରାୟଣ ବେଶ

कब कार्तिक शुक्ल एकादशी — पंचुक का आरम्भ (अक्टूबर–नवम्बर)

वेश-विधान

कार्तिक शुक्ल एकादशी — *उत्थापन* या बड़ी एकादशी, जब आषाढ़ शुक्ल एकादशी से आरम्भ चार मास के शयन के बाद प्रभु जागते हैं — को जगन्नाथ नारायण-रूप में लक्ष्मी को पार्श्व में बिठाए दर्शन देते हैं — चतुर्भुज राज-वेश, शंख-चक्र, स्वर्ण-मुकुट, देवी लाल रेशम में।

> **महत्व**
>
> परमात्मा एकाकी पुरुष नहीं, युगल है: प्रभुत्व (नारायण) कृपा और समृद्धि (लक्ष्मी) से अभिन्न। कार्तिक के पाँच अन्तिम दिन एक के बाद एक पाँच महान रूप प्रस्तुत करते हैं — एक के अनेक मुखों पर संक्षिप्त प्रवचन।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

19

बंकचूड़ वेश

टेढ़ी चूड़ा (कलगी) का वेश

୧୯. ବାଙ୍କଚୂଡ଼ା ବେଶ

कब कार्तिक शुक्ल द्वादशी (अक्टूबर–नवम्बर)

वेश-विधान

प्रभु के मुकुट पर टेढ़ी कलगी (*बंक चूड़ा*) — कृष्ण का झुका मयूरपंख — सजाई जाती है, साथ में वृन्दावन के वंशीधर की शैली के पुष्प और वस्त्रालंकार।

> **महत्व**
>
> झुका मुकुट मुस्कुराता मुकुट है। गम्भीर पंचुक दिनों के बीच यह वेश राज-मन्दिर के हृदय में गोपाल की क्रीड़ा जीवित रखता है — कृपा को कठोर होने की आवश्यकता नहीं।

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

20

त्रिविक्रम वेश (ढलिकिआ)

तीन ब्रह्माण्ड-व्यापी पग

୨୦. ତ୍ରିବିକ୍ରମ ବେଶ

कब कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी (अक्टूबर–नवम्बर)

वेश-विधान

जगन्नाथ त्रिविक्रम-रूप में — त्रिलोक नापने हेतु वामन का विराट रूप — एक चरण उठाए, शंख-चक्र और पूर्ण राज-आभूषणों सहित (*अड़किआ* प्रयुक्त स्वर्णाभूषणों के विशेष समूह का नाम है)।

> **महत्व**
>
> बलि-वामन ने विनम्रता सिखाई तो त्रिविक्रम विराटता सिखाते हैं: जिस ईश्वर ने तीन पग भूमि माँगी, वही एक पग में ब्रह्माण्ड भर देता है। लघुता और विराटता एक ही अखण्ड मुद्रा है।

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

21

अड़किआ / लक्ष्मी-नृसिंह वेश

देवी सहित नरसिंह

୨୧. ଆଡ଼କିଆ / ଲକ୍ଷ୍ମୀନୃସିଂହ ବେଶ

कब कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी (अक्टूबर–नवम्बर)

वेश-विधान

चौथे पंचुक दिवस जगन्नाथ नृसिंह — नर-सिंह अवतार — का रूप धारण करते हैं, पार्श्व में लक्ष्मी — उग्र रक्षक शान्त मुद्रा में। (*अड़किआ* इस दिन की वेश-शैली का नाम है।)

> **महत्व**
>
> नृसिंह वह ईश्वर हैं जो बालक की पुकार पर स्तम्भ फाड़कर प्रकट होते हैं। पुरी उन्हें देवी के साथ आसीन दिखाता है — क्रोध पहले ही करुणा में बदल चुका। सन्देश: परमात्मा निर्दोष के लिए भयंकर हो सकता है, और संकट टलते ही कोमल।

विशेष वेश

22

नागार्जुन वेश

योद्धा-वेश — परशुराम वेश

୨୨. ନାଗାର୍ଜୁନ / ପର୍ଶୁରାମ ବେଶ

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

कब केवल तब, जब कार्तिक का पंचुक छह दिन का हो (अधिक तिथि) · अन्तिम बार 27 नवम्बर 2020, उससे पूर्व 16 नवम्बर 1994

वेश-विधान

समस्त वेशों में दुर्लभतम। विग्रह योद्धा-रूप में सशस्त्र होते हैं: धनुष-तूणीर, खड्ग (*खण्ड*), बाघनख, कवच-शिरस्त्राण, गजदन्त-आकार के आभूषण। यह परशुराम द्वारा सहस्रबाहु सहस्रार्जुन के वध का, और एक अन्य कथा में अर्जुन व उनके पुत्र नागार्जुन के युद्ध का स्मरण है। बीसवीं शताब्दी में यह केवल 1966, 1967, 1968, 1993 और 1994 में हुआ; 2020 में इतिहास में प्रथम बार महामारी के कारण भक्तों की अनुपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

महत्व

प्रेम के ईश्वर धर्म के पुनर्स्थापक भी हैं। पीढ़ी में एक बार श्रीमंदिर यह मुख दिखाता है — विश्व को स्मरण कराते हुए कि निर्दोष की रक्षा के बल के बिना करुणा अधूरी है। भविष्य मालिका की परम्परा में इस योद्धा-रूप को युग-परिवर्तन का संकेत माना जाता है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

23

घोड़लागि वेश

शीतकालीन वेश

୨୩. ଘୋଡ଼ଲାଗି ବେଶ

कब मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी (ओढ़ण षष्ठी) से बसन्त पंचमी (नवम्बर–फरवरी)

वेश-विधान

ओढ़ण षष्ठी की पहली ठण्ड के साथ विग्रहों को गरम रज़ाईनुमा और ऊनी आवरणों (*घोड़* = ओढ़ना) — भारी रेशम, मखमल और शॉल — में लपेटा जाता है, जो बसन्त तक प्रतिदिन पहनाए जाते हैं।

> **महत्व**
>
> ऐसे ईश्वर जिन्हें ठण्ड लगती है। पुरी के आत्मीयता-धर्म को इससे बेहतर कुछ नहीं कहता — माँ जैसी यह चिन्ता कि प्रभु को सर्दी न लग जाए। पावन ऋतुओं से ऊपर नहीं; वह हमारे साथ उनके भीतर रहता है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

24

श्राद्ध वेश

प्रभु स्वयं पितृ-कर्म करते हैं

୨୪. ଶ୍ରାଦ୍ଧ ବେଶ

कब मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी (नवम्बर–दिसम्बर)

वेश-विधान

इस दिन — उन तीन दिनों में अन्तिम, जिनमें प्रभु अपने पितरों के निमित्त *दीपदान* करते हैं — विग्रहों को असाधारण लम्बे वस्त्र पहनाए जाते हैं — जगन्नाथ को 27 फुट, बलभद्र को 21, सुभद्रा को 18 — सिर *सिरिकपड़ा* वस्त्र से ढका, पितृ-कर्म करते गृहस्थ की भाँति। प्रभु की ओर से उनके माता-पिता नन्द-यशोदा और वसुदेव-देवकी को तर्पण, तथा मन्दिर-निर्माता राजा इन्द्रद्युम्न को दीप अर्पित किया जाता है।

> **महत्व**
>
> ईश्वर स्वयं अपने माता-पिता और अपने मानव संरक्षक का सम्मान करते हैं। पूर्वजों के प्रति कर्तव्य — *पितृ-धर्म* — प्रभु दूसरों पर थोपा गया भार नहीं; वे उसे स्वयं पहले करते हैं। कृतज्ञता का आदर्श सिंहासन से प्रस्तुत होता है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

25

पुष्याभिषेक वेश

पौष पूर्णिमा का अभिषिक्त राज-वेश

୨୫. ପୂଷ୍ୟାଭିଷେକ ବେଶ

कब पौष पूर्णिमा (दिसम्बर–जनवरी) — पुष्य-ऋतु का अभिषेक

वेश-विधान

विग्रह पुष्य-ऋतु के *अभिषेक* से जुड़े देदीप्यमान राज-वेश में प्रकट होते हैं — वह राज्याभिषेक जो मन्दिर की प्रतिष्ठा का स्मरण कराता है, जब प्रभु पुनः स्वर्ण धारण करते हैं।

> **महत्व**
>
> सर्वोच्च सम्मान उन्हें अर्पित है जिनके समक्ष हर सांसारिक शासक सेवक बन जाता है। ओड़िशा के राजा उन्हीं के नाम पर अभिषिक्त होते थे; इस रात्रि मन्दिर उन्हीं का अभिषेक करता है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

26

नबांक वेश

मकर संक्रान्ति की पूर्वसन्ध्या

୨୬. ନବାଙ୍କ ବେଶ

कब मकर संक्रान्ति से पूर्व सन्ध्या (मध्य जनवरी)

वेश-विधान

विग्रह लाल किनारी का लम्बा वस्त्र, वैसी ही पगड़ी और तुलसी-पत्र की मालाएँ धारण करते हैं; परम्परा इस वेश को श्री चैतन्य महाप्रभु के काल से जोड़ती है।

> **महत्व**
>
> सूर्य उत्तरायण होता है; वर्ष उसके साथ मुड़ता है। तुलसी — विनम्रतम पत्र — इस दिन का आभूषण है। और चैतन्य की स्मृति याद दिलाती है कि पुरी उस प्रेमोन्मत्त महासन्त का घर था जो पाँच सौ वर्ष पूर्व इन्हीं रथों के आगे नृत्य करते थे।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

27

मकर चौरासी वेश

मकर संक्रान्ति का वेश

୨୭. ମକରଚୌରାଶି ବେଶ

कब मकर संक्रान्ति (मध्य जनवरी), जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं

वेश-विधान

मकर संक्रान्ति के दिन मंगल आरती और प्रातःकालीन अबकाश नीति के पश्चात् विग्रहों को *पट पहड़ा* — रेशमी वस्त्र — पहनाया जाता है और फिर तीनों विग्रहों पर उस दिन की विशेष कलगी *मकर चूला* सजाई जाती है।

> **महत्व**
>
> ब्रह्माण्डीय काल, फसल और उपासना प्रकृति की पोषक व्यवस्था के प्रति कृतज्ञता में मिलते हैं। प्रभु का वस्त्रागार आकाश का पंचांग उतनी ही निष्ठा से निभाता है जितना पर्वों का।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

28

पद्म वेश

कमल-वेश

୨୮. ପଦ୍ମ ବେଶ

कब माघ अमावस्या से पूर्व पड़ने वाले बुधवार या शनिवार — केवल एक दिन (जनवरी–फरवरी)

वेश-विधान

सर्वाधिक कलात्मक वेशों में एक: विग्रह पूर्णतः कमल और कमल-आकृतियों से सजते हैं — शोला (भारतीय कॉर्क), लेस, कागज़ और गोंद से बने कमल-मुकुट, कमल-हार, कमल-चक्र — जिन्हें मन्दिर के शोला-शिल्पी घोर शीत में गढ़ते हैं।

> **महत्व**
>
> कमल कीचड़ से निष्कलंक उठता है — संसार में रहकर भी संसार का न होने का प्राचीनतम भारतीय प्रतीक। यह वेश तब बनता है जब प्राकृतिक कमल खिलता ही नहीं — यह भक्ति की सूझ है: प्रेम वह रच लेता है जो ऋतु रोक लेती है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

29

सेनापट लागि वेश

बाहुड़ा यात्रा की पूर्वसन्ध्या का वेश

୨୯. ସେନାପଟା ଲାଗି ବେଶ

कब बाहुड़ा यात्रा — रथों की वापसी यात्रा — से एक दिन पूर्व (जून–जुलाई)

वेश-विधान

बाहुड़ा यात्रा — गुण्डिचा मन्दिर से श्रीमंदिर की ओर रथों की वापसी — से एक दिन पूर्व विग्रहों का एक विशिष्ट अनुष्ठानिक शृंगार होता है: पूर्ण औपचारिक वस्त्र और आभूषण, प्रभु मानो घर-वापसी की यात्रा से पूर्व अपना दरबार ग्रहण करने को सजे हों।

> **महत्व**
>
> महायात्रा की पूर्वसन्ध्या पर भी प्रभु शान्त अनुष्ठान से सजाए जाते हैं। यह वेश हमें सेवा की ओर लौटाता है: हर आभूषण तभी सार्थक है जब वह भक्ति और स्मरण का आधार बने — प्रभु का वस्त्रागार सदा, सबसे पहले, सेवा का कर्म है।

चित्र: “32 बेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

30

गज-उद्धारण वेश

गजराज का उद्धार

୩୦. ଗଜଉଦ୍ଧାରଣ ବେଶ

कब माघ पूर्णिमा (जनवरी–फरवरी)

वेश-विधान

विग्रह उस विष्णु के रूप में सजते हैं जो सरोवर में ग्राह द्वारा पकड़े गजराज गजेन्द्र की रक्षा हेतु गरुड़ पर उतरते हैं; रत्नसिंहासन के सम्मुख हाथी, ग्राह और कमलों की आकृतियाँ रखी जाती हैं।

> **महत्व**
>
> गजेन्द्र-मोक्ष शरणागति का शास्त्र है: जब हाथी का अपना बल चुक गया, उसने सूँड़ में एक कमल उठाकर पुकारा — और ईश्वर तत्क्षण आए — भागवत में गरुड़ पर, और लोक-कथा में इतनी शीघ्रता से मानो पैदल ही दौड़े आए हों। यह वेश सिखाता है — सच्ची पुकार किसी भी अनुष्ठान से पहले उन तक पहुँचती है।

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

31

चाचेरी वेश

रंगोत्सव — दोल यात्रा

୩୧. ଚାଚେରୀ ବେଶ

कब फाल्गुन शुक्ल दशमी से चतुर्दशी, फिर दोल पूर्णिमा (फरवरी–मार्च)

वेश-विधान

होली से पूर्व पाँच दिन विग्रह विशेष *बैरानी* और *माधबली* वस्त्र, चार कुण्डल और दो *तड़गी* बाजूबन्द धारण करते हैं, मध्याह्न में चन्दन-लेप होता है। दोल पूर्णिमा को प्रतिनिधि विग्रह दोलगोविन्द *दोल वेदी* पर झूलते हैं, अबीर अर्पित होता है और प्रभु पुनः सुना वेश धारण करते हैं।

> **महत्व**
>
> क्रीड़ा (*लीला*) एक पावन श्रेणी है। आनन्द में उड़ाया रंग, वसन्त का झूला, हास — श्रीमंदिर उल्लास को ही पवित्र करता है। जो आस्था उत्सव नहीं मना सकती, वह ईश्वर का आधा भाग भूल चुकी है।

चित्र: “32 वेश” प्रदर्शनी, लिंगराज भजन मण्डप, भुवनेश्वर, अगस्त 2026

32

राजराजेश्वरी वेश

कार्तिक पूर्णिमा का स्वर्ण वेश — राजराजेश्वर वेश भी कहा जाता है

୩୨. ରାଜରାଜେଶ୍ୱରୀ ବେଶ

कब कार्तिक पूर्णिमा — अन्तिम पंचुक दिवस (अक्टूबर–नवम्बर)

वेश-विधान

कार्तिक मास मन्दिर के भीतर पूर्ण सुना वेश से समाप्त होता है: विग्रह राजाधिराज — सम्राटों के सम्राट — स्वर्ण-मुकुट, हस्त और आभूषणों में। उसी प्रभात ओड़िशा *बोइत बन्दाण* में लघु नौकाएँ तैराकर बाली, जावा और श्रीलंका से अपने प्राचीन समुद्री व्यापार का स्मरण करता है।

> **महत्व**
>
> तप का मास वैभव में समाप्त होता है — तीस दिन व्रत रखने वाली यात्री अपने प्रभु को मुकुटधारी देखती है। और जल पर तैरती नौकाएँ स्मरण कराती हैं कि जगन्नाथ-संस्कृति सदा बाहर, समुद्र-पार, विश्व की ओर देखती रही।

हर धर्म के लिए एक चिन्तन

वेश विश्व को क्या सिखाते हैं

1

ईश्वर वही रूप लेते हैं जो प्रेम माँगता है

स्नान पूर्णिमा का हाथी वेश, राम का धनुष, कृष्ण की वंशी, चन्दन-नौका पर शिवलिंग — एक प्रभु, हर मुख। पुरी विश्व को बहुलता का जीवन्त आदर्श देता है — दूर से सहिष्णुता नहीं, आलिंगन।

2

पावन ऋतुओं के भीतर बसता है

ग्रीष्म में चन्दन, शीत में ऊन, महास्नान के बाद रुग्णता, रथों से पहले नवयौवन — परमात्मा पृथ्वी की लय से ऊपर नहीं; वे उसे हमारे साथ निभाते हैं। पर्यावरण और भक्ति एक ही साधना हैं।

3

समावेश अनुष्ठान में ही लिखा है

आदिवासी दइतापति प्रभु की रुग्ण-सेवा करते हैं; गजपति राजा रथ बुहारते हैं; हर जाति के बुनकर, शोला-शिल्पी, माली और स्वर्णकार वेशों को सम्भव बनाते हैं; और रथयात्रा में समस्त मानवता उनके दर्शन करती है। मन्दिर का पदानुक्रम अपने पावनतम क्षणों में उलट जाता है।

4

सम्पत्ति अर्पण है, स्वामित्व नहीं

विजेता राजा का दो सौ किलो स्वर्ण अब वर्ष में पाँच बार काष्ठ-देव को सजाता है — और वही देह हर भोर सादा तड़प पहनती है। सम्राट-भाव और सरलता, सुना वेश और अबकाश, साथ-साथ हैं।

5

बल और कोमलता एक हैं

वेश-पंचांग में कालिय का दमन, प्रलम्ब का वध, सशस्त्र नागार्जुन हैं — और राधा-दामोदर, पद्म, बड़ा शृंगार भी। जो करुणा रक्षा नहीं कर सकती और जो शक्ति प्रेम नहीं कर सकती — दोनों अधूरी हैं। जगत के नाथ पूर्ण हैं।

6

आनन्द धार्मिक कर्तव्य है

चाचेरी के रंग, वनभोजी का वन-भोज, दोल का झूला, प्रति रात्रि गाया काव्य — जगन्नाथ-संस्कृति उत्सव की संस्कृति है। एक चिन्तित शताब्दी में यही स्वयं एक सन्देश है।

प्रकाशक परिचय

सुधर्मा महा-महा संघ भारत

पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र

भविष्य मालिका के व्याख्याता · श्रीमद्भागवत महापुराण के शिक्षक

पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र ने अपना जीवन श्रीमद्भागवत महापुराण और **भविष्य मालिका** के अध्ययन और प्रचार को समर्पित किया है — वह भविष्यवाणी-शास्त्र जिसे 15वीं–16वीं शताब्दी में ओड़िशा के **पंचसखा** — भगवान जगन्नाथ के पाँच महान सन्त-भक्त अच्युतानन्द दास, बलराम दास, जगन्नाथ दास, अनन्त दास और यशोवन्त दास — ने रचा। भारत और विदेश में लाखों तक पहुँचते दैनिक प्रवचनों के माध्यम से वे सिखाते हैं कि वर्तमान संक्रमण-काल का सामना भय से नहीं, धर्म से, *त्रिसन्ध्या* की नित्य साधना से और माधव-नाम के स्मरण से करना है — वह मार्ग जिसे मालिका आगामी सत्ययुग की ओर ले जाने वाला बताती है।

सुधर्मा महा-महा संघ भारत

बिश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट · Bharat

सुधर्मा महा-महा संघ भारत, बिश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में, सनातन धर्म, श्रीमद्भागवत और भविष्य मालिका के ज्ञान को हर देश के जिज्ञासुओं तक पहुँचाने के लिए कार्यरत है — प्रवचनों, प्रकाशनों, सत्तर से अधिक भाषाओं में अनुवाद और दैनिक डिजिटल शिक्षाओं के माध्यम से।

वेबसाइट	वेबसाइट	त्रिसन्ध्या	एक्स (ट्विटर)
www.bhavishyamalika.com	www.kalkiabatara.org	www.trisandhya.com	@KalkiOfficialX

यूट्यूब

Kalki Avatar - The Official Channel (@Kalki_Avatara) & Dr Pandit Shri Kashinath Mishra Official (@Dr-Pt-Kashinath-Mishra)

जय जगन्नाथ

श्रद्धापूर्वक समर्पित

III · भविष्य मालिका और कल्कि-युग

भविष्य मालिका

आगामी काल के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन

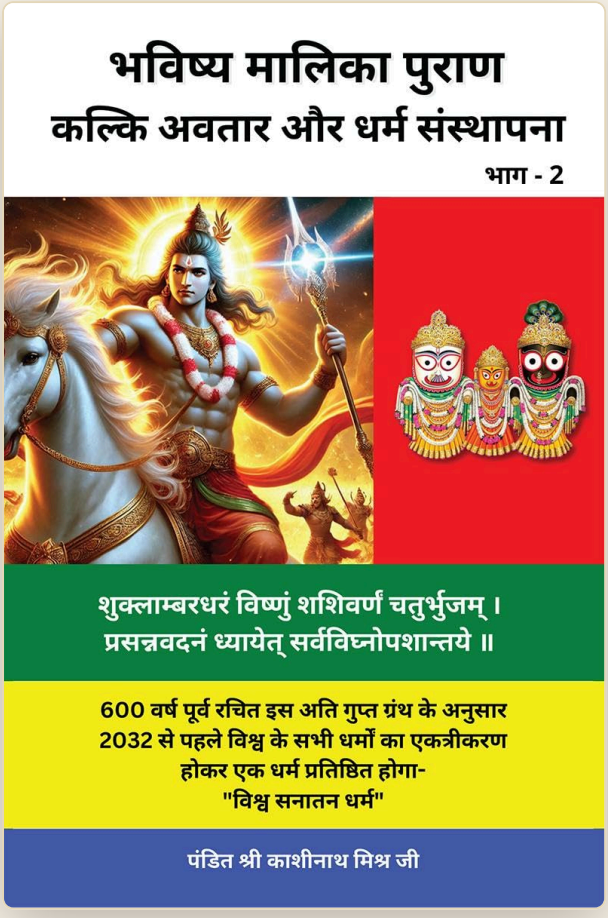

भविष्य मालिका पुराण — कल्कि अवतार और धर्म संस्थापना, भाग-2

लेखक: पंडित श्री काशीनाथ मिश्र जी

> इस ग्रन्थ के आवरण पर मुद्रित:
> "600 वर्ष पूर्व रचित इस अति गुप्त ग्रंथ के अनुसार 2032 से पहले विश्व के सभी धर्मों का एकत्रीकरण होकर एक धर्म प्रतिष्ठित होगा — 'विश्व सनातन धर्म'"

भविष्य मालिका — शाब्दिक अर्थ "आगामी की माला" — वह भविष्यवाणी-शास्त्र है जिसे ओड़िशा **पंचसखा** से जोड़ता है — भगवान जगन्नाथ के पाँच महान सन्त-भक्त, जो 15वीं–16वीं शताब्दी में हुए: अच्युतानन्द दास, बलराम दास, जगन्नाथ दास, अनन्त दास और यशोवन्त दास। ओड़िया ताड़पत्र-पद्य में रचित और शताब्दियों से ओड़िशा की हस्तलेख-परम्परा में सुरक्षित, यह पुरी की संस्कृति से अभिन्न है: इसके रचयिता स्वयं जीवनभर जगन्नाथ के भक्त थे, और इसकी शिक्षा उसी का विस्तार मानी जाती है जो जगत के नाथ अपने पावन वेशों द्वारा विश्व को पहले ही दिखाते हैं — कि एक ही परमात्मा हर युग की आवश्यकता के अनुसार रूप धारण करता है।

इस परम्परा के अनुयायी मालिका को मुख्यतः आगामी घटनाओं की समय-सारणी नहीं मानते। इसका गहरा प्रयोजन आध्यात्मिक मार्गदर्शन बताया जाता है: यह पहचानने का आह्वान कि वर्तमान युग संक्रमण-काल है, और इसका सामना भय से नहीं, धर्म से करना है। पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र, जिन्होंने अपना अधिकांश जीवन इस ग्रन्थ तथा श्रीमद्भागवत महापुराण के अध्ययन-अध्यापन को समर्पित किया है, इसे इसी दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं — ऐसा शास्त्र जो सरलता, पवित्रता और भक्ति जगाने के लिए है, उस विश्व को सम्बोधित जिसे यह एक सन्धि-बिन्दु के निकट बताता है।

यहाँ चित्रित ग्रन्थ — भविष्य मालिका पुराण का द्वितीय भाग, पंडित काशीनाथ मिश्र के कर्तृत्व में प्रकाशित — **कल्कि अवतार** के आगमन और धर्म की पुनर्स्थापना (*धर्म संस्थापना*) सम्बन्धी परम्परा की शिक्षा प्रस्तुत करता है। इस प्रकाशन में इसे उस शिक्षा के प्राथमिक शास्त्रीय साक्षी के रूप में प्रस्तुत किया गया है — कौतूहल की वस्तु के रूप में नहीं, अपितु उस जीवन्त शास्त्र के रूप में जिससे यह मिशन अपना सन्देश ग्रहण करता है।

यह अंश भविष्य मालिका परम्परा तथा सुधर्मा महा-महा संघ भारत की शिक्षा और मान्यता प्रस्तुत करता है। यह पाठक को आस्था और शास्त्रीय व्याख्या के विषय के रूप में अर्पित है, स्थापित शैक्षणिक इतिहास के दावे के रूप में नहीं।

III · भविष्य मालिका और कल्कि-युग

जगन्नाथ से कल्कि तक

सनातन प्रभु और धर्म की पुनर्स्थापना

इस प्रकाशन का प्रत्येक वेश एक ही पाठ भिन्न स्वर में सिखाता है: जगत के नाथ किसी एक रूप में सीमित नहीं। वे स्नान पूर्णिमा को गजानन हैं, वंशीधर कृष्ण, धनुर्धर राम, शान्त हुए क्रोधी नृसिंह, एक पग में त्रिविक्रम बनते वामन, पीढ़ी में एक बार योद्धा नागार्जुन। ओड़िशा इसे कभी केवल वेशभूषा नहीं मानता — यह धर्मशास्त्र के रूप में अर्पित है: एक परमात्मा क्षण की आवश्यकता और भक्त के प्रेम के अनुसार स्वयं को प्रकट करता है।

सुधर्मा महा-महा संघ भारत और पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र सिखाते हैं कि यही सिद्धान्त युगों में भी विस्तृत होता है। भविष्य मालिका की परम्परा मानती है कि पुरी में महाप्रभु जगन्नाथ रूप में पूजित वही परमात्मा वर्तमान युग में धर्म की पुनर्स्थापना हेतु **कल्कि अवतार** के रूप में प्रकट हुए हैं — पुराणों में वर्णित महान अवतारों में दशम एवं अन्तिम, जिनका कार्य अधर्म का अन्त और सन्मार्ग की पुनर्स्थापना है।

यह प्रकाशन उसी विश्वास को प्रस्तुत करता है जो इस मिशन के भीतर सिखाया जाता है: कि **महाप्रभु कल्कि जन्म ले चुके हैं**। यह भविष्य मालिका परम्परा तथा सुधर्मा महा-महा संघ भारत की शिक्षा और आस्था के रूप में यहाँ अर्पित है, अनेक मान्यताओं के अन्तरराष्ट्रीय पाठकवर्ग के प्रति सम्मान सहित — सार्वभौमिक ऐतिहासिक स्वीकृति के दावे के रूप में नहीं, अपितु उस जीवन्त केन्द्र के रूप में जिसके लिए यह मिशन कार्यरत है।

अतः यह सेतु आकस्मिक नहीं, स्वाभाविक है: जो ईश्वर पुरी में बत्तीस पावन वेशों से प्रकट होते हैं, मालिका-परम्परा के अनुसार वही ईश्वर अब इस युग की गहनतम आवश्यकता — धर्म की पुनर्स्थापना — का उत्तर देते हैं।

नागार्जुन वेश — प्रभु का दुर्लभ योद्धा-रूप, भविष्य मालिका परम्परा में युग-परिवर्तन के संकेत रूप में माना गया।

> ईश्वर वही रूप लेते हैं जो प्रेम माँगता है

III · भविष्य मालिका और कल्कि-युग

रक्षा का मार्ग

आगामी काल हेतु आध्यात्मिक तैयारी

सुधर्मा महा-महा संघ भारत सिखाता है कि भविष्य मालिका परम्परा में वर्णित काल हेतु प्रमुख आध्यात्मिक साधनाएँ तीन हैं — प्रत्येक सरल, प्रत्येक जन्म, धन या विद्या के भेद बिना हर साधक के लिए सुलभ।

त्रिसन्ध्या

दिन के तीन पावन सन्धि-कालों — प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या — पर ईश्वर का अनुशासित स्मरण एवं प्रार्थना। इसका प्रयोजन है नियमित स्मरण, चित्त-शुद्धि, श्रद्धा का दृढ़ीकरण और दिन के प्रत्येक प्रहर में मन को धर्म-केन्द्रित रखना। **त्रिसन्ध्या मार्गदर्शन हेतु हमारी वेबसाइटें, www.trisandhya.com अथवा हमारे यूट्यूब चैनल देखें।**

माधव नाम

माधव के नाम का निरन्तर स्मरण एवं जप — "माधव, माधव" — एक भक्ति-मार्ग जो हर साधक के लिए खुला है, जिसे न विद्या चाहिए न धन। यह सरलतम रूप में वहन किया गया स्मरण, समर्पण और चित्त-शुद्धि है — होंठों पर दिव्य नाम।

श्रीमद्भागवत महापुराण

श्रीमद्भागवत महापुराण का नियमित श्रवण, पठन और चिन्तन — वह शास्त्र जिससे ओड़िशा शताब्दियों से कृष्ण-लीला सीखता, भक्ति गहरी करता और आचरण को धर्मानुसार गढ़ता रहा है। भागवत-पाठ पुरी के भक्ति-जीवन और इस मिशन की शिक्षा दोनों के केन्द्र में है।

> भविष्य मालिका परम्परा द्वारा प्रचारित शिक्षाओं के अनुसार, अशान्त काल में मानवता की गहनतम रक्षा भय, धन या सांसारिक शक्ति में नहीं, अपितु ईश्वर की सच्ची भक्ति में है — त्रिसन्ध्या, माधव-नाम के स्मरण और श्रीमद्भागवत महापुराण के नियमित अध्ययन द्वारा।

यह आध्यात्मिक तैयारी और आन्तरिक शरण के रूप में प्रस्तुत है, इस दावे के रूप में नहीं कि भक्ति-साधना युद्ध, आपदा या रोग को भौतिक रूप से रोकती है। परामर्श यही है कि अनिश्चित काल का सामना भय से नहीं, धर्म से किया जाए।

हमें क्या करना चाहिए?

त्रिसन्ध्या

दिन के तीन पावन सन्धि-कालों पर ईश्वर का स्मरण एवं प्रार्थना करें। मार्गदर्शन: www.trisandhya.com

माधव नाम

माधव, माधव का निरन्तर स्मरण रखें।

श्रीमद्भागवत महापुराण

भागवत का नियमित पठन, श्रवण एवं चिन्तन करें।

- सत्य से जिएँ।
- आचरण पवित्र रखें।
- करुणामय बने रहें।
- शाकाहारी बनें।
- नशा एवं हानिकारक आदतों से दूर रहें।
- धर्म का पालन करें।
- भक्ति और दिव्य नाम की शरण लें।

माधव · माधव

अनिश्चित काल में माधव का नाम होंठों पर और प्रभु को हृदय में रखें।

समापन में

वह प्रभु जो कभी दूर नहीं

यहाँ संकलित बत्तीस पावन वेश ऐसे प्रभु को प्रकट करते हैं जो अपने भक्तों से कभी दूर नहीं। वे जागते और स्नान करते हैं, सजाए और भोग पाते हैं, रुग्ण होते और स्वस्थ होते हैं, अपने भक्तों के बीच निकलते और घर लौटते हैं — और प्रेम के लिए रूप-पर-रूप धारण करते हैं: गजानन का गज-मुकुट, कृष्ण की वंशी, सुना वेश का स्वर्ण, नागार्जुन के शस्त्र। अनेक वेश एक ही प्रभु हैं, जो हर ऋतु की आवश्यकता और प्रेम का उत्तर देते हैं।

एक प्रभु, हर रूप — प्रातः अबकाश, स्वर्णमय सुना वेश, योद्धा नागार्जुन।

भविष्य मालिका परम्परा हमसे यही समझ वर्तमान युग में ले चलने को कहती है। यदि प्रभु हर पर्व के लिए नया रूप लेते हैं, तो वे युगों के परिवर्तन से भी अनुपस्थित नहीं। पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र और सुधर्मा महा-महा संघ भारत की शिक्षा में, जगन्नाथ रूप में पूजित प्रभु अब धर्म की पुनर्स्थापना हेतु कल्कि रूप में कार्यरत हैं — वही प्रभु, हमारे समय की सबसे बड़ी आवश्यकता का उत्तर देते हुए।

तो हमसे क्या अपेक्षित है? मालिका में वर्णित काल का भय नहीं, अपितु वह उत्तर जो परम्परा स्वयं बताती है: दिन के तीन सन्धि-कालों पर त्रिसन्ध्या, होंठों पर माधव-नाम, हृदय में श्रीमद्भागवत, और सत्य, पवित्रता तथा करुणा का जीवन। यही तैयारी का अर्थ है। यह आगामी युग से भागती नहीं; यह हमें उसमें प्रभु से मिलने के योग्य बनाती है।

भय से नहीं, धर्म से तैयार हों।

आगे जुड़ें

वेबसाइट	वेबसाइट	त्रिसन्ध्या	एक्स (ट्विटर)
www.bhavishyamalika.com	www.kalkiabatara.org	www.trisandhya.com	@KalkiOfficialX

यूट्यूब

Kalki Avatar - The Official Channel (@Kalki_Avatara) & Dr Pandit Shri Kashinath Mishra Official (@Dr-Pt-Kashinath-Mishra)